जीसस एंड मेरी कॉलेज

<u>आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) एवं हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम वेबीनार रिपोर्ट</u>

विषय - समकालीन हिन्दी उपन्यास और वर्तमान

वक्ता - प्रो. सुधा सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, मैत्रेयी पुष्पा, प्रतिष्ठित रचनाकार

दिनांक - 15 जून

समय - पूर्वाह्न 11 बजे

वेबीनार माध्यम - गूगल मीट, यूट्यूब .

पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या - 216

<u>आयोजक समूह -</u>

प्रधानाचार्या सिस्टर (डॉ.) रोज़िली टी.एल.

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ कनवेनर - डॉ. अलका मारवाहा

डॉ. अमिता तिवारी - अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

वेबीनार कमेटी कनवेनर - डॉ. अमीता मोटवानी

मॉडरेटर - डॉ. सपना गाँधी

<u>तकनीकी टीम :</u>

मेघा जैकब, नवीन जोसेफ थॉमस, वृंदा मोदा, गौरव, डॉ. शिखा सिंह, इशिता सिंह

<u>रिपोर्ट लेखन</u> :

डॉ. अमिता तिवारी, डॉ. सपना गाँधी, डॉ. बीरेंद्र सिंह

<u>वेबीनार सारांश</u>

15 जून, **2020** को आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं हिंदी विभाग, जीसस एंड मेरी कॉलेज द्वारा - 'समकालीन हिन्दी उपन्यास और वर्तमान' विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया। इसमें प्रमुख वक्ता के रूप में प्रो. सुधा सिंह एवं मैत्रेयी पुष्पा को आमंत्रित किया गया था। वेबिनार की शुरुआत करते हुए सर्वप्रथम कॉलेज के हिन्दी विभाग के प्रभारी डॉ. अमिता तिवारी में दोनों वक्ताओं का स्वागत किया। इसके साथ ही वेबीनार से जुड़े श्रोताओं का अभिनंदन करते हुए दोनों वक्ताओं का परिचय दिया। इसके बाद कॉलेज की प्रधानाचार्या सिस्टर (डॉ.) रोज़िली टी.एल. ने वक्ताओं का अभिवादन किया। वेबिनार के विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने सबकी कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

प्रो. सुधा सिंह ने 'समकालीन उपन्यास और वर्तमान' विषय पर बात करते हुए सर्वप्रथम कहा कि समकालीनता का संबंध बिल्कुल अभी लिखी जा रही रचना से ही नहीं है। इसका संबंध संवेदना से भी है। वहीं किसी उपन्यास का वर्तमान से संबंध का अर्थ यह है कि वह किस प्रकार वर्तमान समय से मुठभेड़ करते हुए ही लिखी जा रही है। फिर चाहे वह सामाजिक उपन्यास हो अथवा ऐतिहासिक उपन्यास। इसी प्रकार से रचनाकार अपने समय की संवेदना और समस्याओं को रचना में उठाते हुए शिल्प के स्तर पर फंतासी, रूपक आदि का भी प्रयोग करता है। उन्होंने कहा कि साहित्य में समाज का यथार्थ हू-ब-हू नहीं आता। साहित्य के अंदर भी एक दुनियां है, जो भाषा के द्वारा सादृश्यता के आधार पर बनाई जाती है। उन्होंने राष्ट्र के अभ्युदय और स्त्री की अभिव्यक्ति दोनों को एक साथ उपन्यास से जोड़ने पर भी सवाल उठाया। अर्थात उपन्यास को राष्ट्र से जोड़ना और ठीक उसी समय स्त्री संवेदना से भी जोड़ देना ठीक नहीं है क्योंकि राष्ट्र की अवधारणा में स्त्री है ही नहीं। उन्होंने राष्ट्र की पूरी परिकल्पना को स्त्री विरोधी बताया। प्रो. सुधा सिंह ने मैत्रेयी पुष्पा के ही उपन्यास 'फरिश्ते निकले' के माध्यम से यह बताया कि हमारा समाज असमान विकास वाला समाज है। अतः जिन समस्याओं का हल हम निकाल चुके हैं, जरूरी नहीं है कि वह उपन्यास में फिर से चित्रित ना हो। 'फरिश्ते निकले' में बाल-विवाह की समस्या को उठाया गया है। बड़े शहरों में हो सकता है कि अब इस तरह की समस्या ना हो, किंतु हमारी पहुंच से दूर भारतीय समाज में यह आज भी घटित हो रहा है। इसी प्रकार से उन्होंने 'मैला आँचल' उपन्यास का उदाहरण देकर स्थानीय यथार्थ की चर्चा करते हुए बताया कि स्थानीय यथार्थ उपन्यासों में पूंजीवाद के प्रभाव के कारण ठीक से नहीं आ पा रहा है। अंत में उन्होंने बताया कि उपन्यास मनुष्य जीवन की ही कहानी है। इसलिए रचनाकार को मानवीय संवेदनाओं का चित्रण करते हुए उसके साथ खड़ा होना होगा।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने वक्तव्य में बड़े सहज रुप से उपन्यास लेखन के पीछे की कथा को सामने रखा। उनके द्वारा रचित 'फरिश्ते निकले' उपन्यास का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह बुंदेलखंड के गांव से जुड़ी घटना पर आधारित है। उपन्यास लेखन का कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि किसी स्त्री या घटना को देखकर जब पीड़ा होती है, तब हम उसे लिखते हैं। पीड़ा और उस पीड़ा से पार जाने का स्वप्न हमें उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त करता है। इन्होंने अपनी रचना 'तब्दील निगाहें' की चर्चा करते हुए बताया की हिंदी साहित्य में पुरुष रचनाकारों ने स्त्रियों को किस प्रकार से अपनी रचना में दिखाया है। इसी संदर्भ में वह स्त्री दृष्टि से जैनेंद्र के 'त्यागपत्र' और 'सुनीता' की चर्चा करते हुए उसमे चित्रित स्त्री पात्रों पर फिर से विचार करने पर जोर देती हैं। उनके अनुसार पुरुष रचनाकार द्वारा चित्रित स्त्री पात्रों से असंतुष्ट होकर ही स्त्री रचनाकारों ने नए ढंग से स्त्री समस्याओं को दिखाया है। यह अंतर मूलतः अनुमान और अनुभव का अंतर है। मैत्रेयी पुष्पा ऐसी स्त्री रचनाकारों पर भी सवाल उठाती है जो अपनी रचनाओं में स्त्री को मात्र बुरे

खाते से निकालकर अच्छा बनाने की कोशिश करती हैं। अपने लेखन के संदर्भ में उन्होंने कहा कि अपनी रचनाओं में उन्होंने सत्य को कभी पर्दे में नहीं रखा और ना ही बात को कभी बढ़ा चढ़ाकर लिखा। अतः जो पीड़ादायक यथार्थ है, उसे पुरे साहस के साथ अपनी रचनाओं में उन्होंने दर्ज किया।

इस सारगर्भित वक्तव्य के बाद प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया। इसमें दोनों वक्ताओं से उपन्यास की रचना प्रक्रिया, उसकी सार्थकता तथा शिल्प से जुड़े प्रश्न श्रोताओं द्वारा पूछे गए। इस कार्यक्रम का संचालन जीसस एंड मेरी कॉलेज के हिन्दी विभाग की प्रभारी अमिता तिवारी ने किया तथा सत्र को मॉडेरट करने का कार्य हिंदी विभाग की डॉ. सपना गांधी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अमीता मोटवानी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

वेबीनार से संबंधित तस्वीरें -